International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 12-09-2020; Accepted: 27-09-2020; Published: 13-10-2020
www.hindijournal.com
Volume 6; Issue 5; 2020; Page No. 104-106

वृंदावन लाल वर्मा के ऐतिहासिक उपन्यास मृगनयनी में भारतीय संस्कृति का चित्रण

चंदन चौहान

शौधार्थी, गौहाटी विश्वाविद्यालय, असम, भारत

प्रस्तावना

हिन्दी साहित्य है गद्य विधाओं में उपन्यास सबसे चर्चित और महत्वपूर्ण विधा है। उपन्यास में जीवन की समसामयिक स्थितियों का लेखा-जोखा रहता है। जिसमें ऐतिहासिक उपन्यास विशेष महत्वपूर्ण है। क्यों कि ऐतिहासिक उपन्यासों में विगत समय और जीवन की स्थितियों का संकलन रहता है। इसलिए ऐतिहासिक उपन्यासों का दायित्व अधिक होता है। किसी समय के ऐतिहासिक घटनाओं को यथानुसार उपस्थापन करना उनके लिए महत्तपुर्ण कार्य होता है। वे प्राचीन घटनाओं को आधुनिक संढर्भ में प्रस्तुत कर प्राचीन और आधुनिकता में मिलाप करना चाहते हैं। प्राचीन चरित्र, घटनाएँ, संस्कृति, लोककथाएँ आदि जो हमारी एकमात्र धरोहर हमारे जीवन की अस्मिता है। उसे बचा के रखना तथा प्रकाश में लाने का प्रयास ऐतिहासिक उपन्यासों के माध्यम से होता है। जिसमें हिन्दी साहित्य में ऐतिहासिक उपन्यासकार के रुप में विख्यात डॉ वृन्दावन लाल वर्मा का नाम सबसे उच्च स्थान पर है। आपने ऐतिहासिक कथाओं को आधार बनाकर विभिन्न ऐतिहासिक उपन्यासों की रचना किया है। जिसमें ऐतिहासिक धरोहर किला, मन्दिर, मस्जिद आदि का वर्णन वृन्दावन लाल वर्मा ने किया है। साथ ही आपने ऐतिहासिक कथा प्रसंगों को अपने रचना का आधार बनाया है। आपने ग्वालियर, विराटा, झांसी आदि स्थानों के महत्व को वर्णन किया है। वर्मा जी ने ऐतिहासिक कथा –प्रसंगो को लिया है, साथ ही उसमें चरित्र के रुप में किसी पुरुष को न लेकर नारी के देवी रूप का वर्णन किया है। वर्मा जी के ऐसे महान व्यक्तित्व के लिए शुकल जी कहते हैं " ऐतिहासिक उपन्यास के क्षेत्र में केवल बाबु वृन्दावन लाल वर्मा जी दिखायी दे रहे हैं। उन्होंने भारतीय इतिहास के मध्ययुग के प्रारम्भ में बुन्देलखण्ड की स्थिती को लेकर गढकुम्भार, विराटा की पदमीनि, नामक सुन्दर ऐतिहासिक उपन्यास लिखे हैं।"1 कहना न होगा की वर्मा जी इन्ही ऐतिहासिक उपन्यासों के प्रकाशन से सम्पूर्ण हिन्दी जगत का ध्यान आकर्षित कर दिया है। इसलिए आपको हिन्दी उपन्यास साहित्त्य का सर वाल्टर स्कट कहा जाता है। मृगनयनी वृंदावन लाल वर्मा का बहुचर्चित एक ऐतिहासिक उपन्यास है। जिसमें मानसिंह तोमर के समय की घटनाओं का वर्णन है। उपन्यास के मूल में निन्नी (मृगनयनी) की वीरता का वर्णन करना है। मगर साथ ही लेखक ने भारतीय संस्कृति का चित्रण भी किया है। भारतीय संस्कृति के अन्तर्गत रहन-सहन, उत्सव-पर्व, नृत्य-संगीत, धर्म, विवाह, खान-पान, वेष-भुषा आदि विभिन्न पहलुओं का वर्णन मिलता है। जिसकों वर्मा जी उपन्यास के माध्यम से वर्णन करने का प्रयास किया है।

भारतीय संस्कृति के विभिन्न पहलु

संस्कृति का अर्थ मानव – समाज की समग्र साधना, आकंक्षा, प्रयत्न तथा उपलब्धि का योग है। संस्कृति शब्द का प्रयोग दो अर्थों में होता है – एक तो शिष्टता, जिसे अंग्रेजी में कल्चड अथवा सिविलाइचड शब्दों का पर्याय है और दूसरे किसी संस्कृत विशेष का परिचायक है। जब हम कहते हैं कि कोई व्यक्ति किसी संस्कृति विशेष का परिचायक है, तो इसका अर्थ होता है कि वह व्यक्ति किसी धार्मिक, सामाजिक, विशेष किसी रहन – सहन खान – पान से सम्बंधित है। उसका व्यक्तित्व किसी विशेष रिती – रिवाज का परिचायक है। मूल रूप से कहा जाय तो संस्कृति मानव समाज के व्यापक धर्म का परिचायक है। संस्कृति के अंतर्गत मनुष्य के धार्मिक, समाजिक एंव दार्शिनक जीवन के विभिन्न पक्षों का समाहार होता है। निस्सन्देह संस्कृति में किसी भी जाति, समाज के विभिन्न धर्मों, सामाजिक स्थापनाओं में दार्शनिक चिंतन के गुण तथा अवगुण दोनों को समान आदर प्राप्त है। अर्थात संस्कृति किसी जाति अथवा समाज की केवल उपलब्धियों, आकांक्षाओं एंव सफलताओं की समष्टि नहीं है बल्कि उसकी असफलताओं, अवगुणों भेदों- मतभेदों की एक अनवरत कथा भी है। संस्कृति में समाज अथवा जाति के लोक-जीवन की सभी सम्भव पक्षों के समाहार हो जाता है। दूसरे शब्दों में संस्कृति का अर्थ यही है कि किसी जाति अथवा समाज ने दर्शन, धर्म, नीति, राजनीति आदि विभिन्न पक्षों में क्या-क्या आकंक्षाएँ आथवा लक्ष्य निर्धारित किए और उसमें कहा तक सफलता प्राप्त किया है।

संस्कृति की दो दिशाएँ है – भौतिक और मानसिक। भौतिक विकाश का आशय मानव जीवन के नितांत इहलौकिक विकाश से है। जबकि आध्यात्मिक विकाश मनुष्य की चिंतन शक्ति के विकाश का परिचायक है। मानव समाज के सांस्कृतिक गठन में इन दोनों पक्षों का विकाश अपेक्षित है। मूलरूप से मानव के विकाश के लिए भौतिक तथा मानसिक दोनों प्रकार की समृद्धि आवश्यक है। इस सम्बंध में एक उक्ति है कि "सामाजिक, सांस्कृतिक जीवन का व्यापक अर्थ धर्म है, जिसमें समाज की समग्र साधना, आकांक्षा एंव उपलब्धि आ जाती है।"1

संस्कृति मनुष्य से जुड़ा है और मनुष्य साहित्य से जुड़ा है , इसलिए संस्कृति और साहित्य का ओत-प्रोत सम्बंध है। एस आधार पर साहित्य और संस्कृति के परस्पर सम्बंध को समझने के लिए यह समझना सर्वाधिक आवश्यक है कि ये दोनों मानव कल्याण के पावन लक्ष्य को लेके चलते हैं। संस्कृति समाज का व्यापक धर्म है। साहित्य भी इस व्यापक धर्म का ही एक अंग है। दर्शन, धर्म, राजनीति, साहित्य, कला आदि का जीवन से अनिवार्य सम्बंध है और एसका प्रत्येक्ष कारण यह है कि इन सभी तत्वों का सम्बंध जन्म से होता है। कला, शास्त्र, एंव ज्ञान की सभी धाराएँ जीवन के साधना से निकलती है। इससे यह सिद्ध होता है कि साहित्यकार किसी संस्कृति का अंग होता है और उसका अंत संस्कृति के उसी समुद्र में होता है जहाँ व्यक्ति अपनी साहित्यिक साधना में लिप्त रहता है। वर्तमान समय में साहित्य का अंग भारतीय संस्कृति बन गयी है। साहित्य के किसी भी विधा में भारतीय संस्कृति के विभिन्न पहलुओं का वर्णन मिलता है। भारतीय संस्कृति के

अन्तर्गत धर्म, कला, दर्शन, रीति-रिवाज, वेष-भुषा, खानपान, उत्सव – त्योहार, नृत्य-गीत आदि सभी का वर्णन वर्तमान समय के साहित्य में प्राप्त है। चाहे गद्य हो या पद्य दोनों विधाओं में संस्कृति के विभिन्न पहलुओं का वर्णन मिलता है। भारतीय संस्कृति वर्षों पूरानी है। जातँ-पातँ के भेद- भाव जीवन-यापन के विभिन्न स्तर, खान-पान, पहनावा, आदि प्रत्येक संस्कृति में अलग-अलग होते हैं। जिसके कारण अलग-अलग स्थान के लोगों में भाषा, खान-पान, पहनावा में पर्क पड़ जाता है। मगर साहित्यकार अपनी प्रतिभा के जरिए भिन्न सांस्कृतिक पहलुओं को भिन्न परिवेश में वर्णन करता है। संस्कृति के इन्ही पहलुओं को साहित्य के गद्य विदाओं के अन्तर्गत उपन्यास में विशेष स्थान दिया गया है। जिसमें ऐतिहासिक उपन्यास सम्राट वर्मा जी का नाम विशेष महत्वपूर्ण है। वर्मा जी ने भारतीय पूरानी संस्कृति का सुन्दर वर्णन मृगनयली उपन्यास के माध्यम से वर्णन किया है। भारतीय संस्कृति में विशेष रूप से पर्व-त्योहार, रहन-सहन तथा खानपान का विशेष महत्व रहता है। ऐतिहासिक उपन्यास मृगनयनी के माध्यम से भारतीय संस्कृति के कुछ पहलुओं का वर्णन निम्नलिखित रूप में किया जा रहा है--

पर्व या त्योहार : हम भारतीय विभिन्न रूपों में अपनें पर्व-त्योहार या व्रत को मानते आ रहे हैं। व्रत का विधान बहुधा आध्यात्मिक अथवा मानसिक शक्ति की प्राप्ति के लिए और चित्त तथा आत्मशुद्धि के लिए किया जाता है। त्योहार का अर्थ है विशेष उत्सव। भारत में विभिन्न धर्म, वर्ण, जात-पात, सम्प्रदाय के लोग रहते हैं। इसलिए हर दिन कोइ ना कोई त्योहार रहता ही है। भारत के उत्तर से लेकर दक्षिण, पूर्व से लेकर पक्षिम आदि हर कोने में किसी न किसी दिन किसी धर्म सम्प्रदाय का पर्व या त्यौहार रहता ही हैं। इसका एक उदाहरण देखते हैं "चौवीस एकादसी व्रत, प्रदोष व्रत, अधिमास व्रत, सातों वार व्रत, चतुर्थी त्रयोदसी व्रत, जयंतियाँ, संक्रांन्ति कोई दिन ऐसा नहीं होता, जिस दिन भारत में व्रत, पर्व न हो।"2 पूरे देश में मेले, त्यौहार, उत्सव आदि होते रहते हैं। भारत के ऐसे पर्व त्यौहारों का वर्णन हमें हिंदी साहित्य के विभिन्न रूपों में मिलता है। यहाँ हम गद्य विधा के अन्तर्गत उपन्यास के माध्यम से पर्व एंव त्यौहारों का वर्णन करेंगे। उपन्यास का परिसर बड़ा होने के कारण उसमें किसी विषय का वर्णन अति सहज होता है। मृगनयनी नामक ऐतिहासिक उपन्यास में भारत के पर्व-त्यौहारों का वर्णन मिलती है। उपन्यास में राई नामक गावँ में होली के त्यौहार का सुन्दर वर्णन मिलता है। फागुन के महीने में गावँ में होली मनाया गया। जिसमें निन्नी (मृगनयनी) की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण होती है। वह गावँ के लोगों के साथ होली खेलती है " निन्नी ने बाहर निकल पड़ने का आग्रह किया, लाखी तो चाहती ही थी। निन्नी ने आंगन में से डबले में से धुल भरी और एक पूराने घड़े में से पानी उड़ेल कर अगले आक्रमण के लिए पानी सजा ली। लाखी तोड़ा सा गोबर हात में लिया। दोनों बाहर निकल पड़ी।"3

रहन -- सहन : भारतीय संस्कृति में मनुष्य के रहन-सहन का भी वर्णन मिलता है। किसी के रहन-सहन के आधार पर ही उस व्यक्ति के संस्कृति अथवा सम्प्रदाय का अंदाजा लगाया जा सकता है। अलग-अलग जाति धर्म के लोगों का रहन – सहन अलग – अलग होता है। दक्षिण भारत के लोगों का रहन-सहन उत्तर भारत के लोगों के साथ नहीं मिलता और पशिचम भारत के लोगों का रहन – सहन पूर्व भारत के लोगों के साथ नहीं मिलता। पूर्वांचल के राज्यों में गर्मी कम पड़ने के कारण, इसलिए यहाँ लोगों अधिक तर वेष-भुषा उसी तरह का हो जाता हैं पर इसके विपरीत उत्तर भारत के लोगों का खान – पान, रहन – सहन बहुत ही अलग होता है। ठीक उसी तरह दक्षिण के लोगों का खान-पान वेष – भुषा पुरी तरह से अलग होता है। भोगोंलिक ढांचे के अनुसार रहन-सहन सबका अलग होता है। इसके आधार पर बताया जा सकता है कि कौन गरीब कौन धनी है या कौन व्यक्ति किस राज्य या किस प्रदेश का है। उनके साज- सज्जा दैहिक रूप रंग को देखकर बताया जा सकता है कि कौन व्यक्ति किस राज्य या प्रदेश का है। दक्षिण भारत में लोग ज्यादातर लुंगी पहनते है तो, उत्तर भारत के लोग ज्यादतर पायजामा कुर्ते का प्रचलन है। अलग – अलग स्थान के मनुष्य के ढांचे के आधार पर लोगों का रहन – सहन अलग – अलग होता है, जिसे विभिन्न साहित्यकारों ने अपने साहित्य का विषय बनाया है । मृगनयनी नामक ऐतिहासिक उपन्यास में गरीब नारियों के रहन – सहन के साथ-साथ अमीर नारियों के रहन-सहन का वर्णन मिलता है। उपन्यास की नायिका निन्नी (मृगनयनी) गाँव में रहने वाली लड़की थी, जिसका घर घाँस – फुस से बना था, साथ ही खेती करके अपना जीवन व्यतीत करती है। उसका रहन – सहन सामान्य किसी गरीब व्यक्ति की तरह था, अनाज काटना, खेतों में काम करना, गीलि मिट्टी उठाना, गोबर छूना, गाय की सेवा करना आदि इनका प्रतिदिन का कार्य था। अर्थात गावँ का संघर्षपूर्ण जीवन था- " फसल काटकर घर में आया घड्डों में रखने की उतावली थ, परन्तु अन्न- अन्न अभी कही – कही हरा था। पौधों की लहर को देखकर उतावला किसान हाथ में हसिया लिए हुए रह-रह जाता था। हरी बाल को कैसे काटु , होली जलने तक ठहरना ही होगा। "4 साथ ही ग्वालियर राजा के राज दरबार का रहन-सहन अलग था। राजा की रानियाँ बड़े ठाट-बाट से रहती थी। महल में उनका रहन – सहन कुछ लग ढंग का था। सुमन मोहिनी तथा अन्य रानियों का पैर जमीन पड़ता ही नहीं थ। उनकी सेवा में दास – दासियाँ घुमा करती थी। राजस्वी रहन – सहन का एक रूप देख सकते है " मानसिंह अपने नए महल के नीचे वाले दो खंड बनवा चुका था। जानता था सुमन साहिनी के डाह के कारण वह नए महल को बहुत जल्द ही हनवा रहा था। कर्ण महल में अल्प स्थान होने के कारण नवीं रानी के साथ सुमन मोहिनी और सात रानियों की बढ़ती हुई खटपट अधिकाधिक होती चली जावेगी। "5

खान – पान : हमारी भारतीय संस्क़ति में रहन – सहन के अलावा खान – पान का भी विशेष महत्व है। मनुष्य में खान – पान को लेकर विशेष बात देखी जा सकती है। अलग-अलग संस्कृति के लोगों का खान – पान भी अलग – अनग होता है। भारत के पूर्वांचल दिशा के लोग खाने में अधिक रूप में रोटी-चावल खाते हैं, तो दक्षिण दिशा के लोग खाने में अधिक रूप में इडली, डोसा बगेरा खाते हैं। भारतीय संस्कृति में यह विशेष बात है कि लोगों के खान-पान से उनको पहचानना सहज हो जाता है। जब किसी जस्न का माहोल होता है तो खान-पान अलग होता है और जब पुजा पाट का समय रहता है तो लोगों के खान – पान का तौर तरीका अलग होता है। लोगों के खान – पान मात्र परिवार या समाज में सीमित ना रहकर यह साहित्य का भी विषय बन गया है। विभिन्न साहित्य कारों ने इसे विषय बनाकर विभिन्न अवसर पर लोगों के खान-पान का वर्णन किया है। रीमा तिवारी ने पर्व और त्योहार नामक पुस्तक में संक्रांति के अवसर पर लोगों के खान – पान का वर्णन बड़े सुन्दर ढंग से किया है। संक्रांति के दिन बिहार, उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश में लोग तिल, गुड़ आदि के साथ खिचड़ी खाने का रिवाज़ है। लोग बड़े चाव से खिचड़ी बनाते और खाते हैं। इसका एक उदाहरण देख सकते है "इसे खिचड़ी का त्योहार इसलिए कहते हैं कि इस दिन विशेष रूप से खिचड़ी को ही दान दिया जाता है और खिचड़ी खाई जाती है। तिल और गुड़ के लड्डु भी दान में देने का चलन है। सब लोग अपने मित्रों, सम्बंधियों और नाते रिस्तेदारों के यहाँ मिलने जाते हैं और सभी लोग तिल और गुड़ के लड्डु खिलाते हैं। "6 मृगनयनी उपन्यास में लाखी और निन्नी दो नारी पात्र है। जिनकी भूमिका सम्पूर्ण उपन्यास में पुरूषों से कही अधिक सराहनीय है। जो गावँ में सुखा – पुखा खाकर जीवन

व्यतित करते हैं। खेत से जो अनाज मिलता था, उसे वे किसी तरह अपना जीवन निर्वाह किया करते थे। अर्थात उनका खान-पान बहुत ही साधारण ढंग का था। जिसका वर्णन हमें में कुछ इस तरह मिलता है कि " अनाज गाह लेने के बाद ग्वालियर से राज्य की उगाही लेने के लिए सहता आये और पुरानी परम्परा के अनुसार उपज का आठवा अंश ले गये। उगाही में उन्होंने कोई क्रुरता नहीं की, बाकी अनाज को किसानों ने छिपाकर रख लिया।"7

नृत्य-संगीत : भारतीय संस्कृति में लगभग चौषठ कलाओं का वर्णन मिलता है। जिसमें नृत्य, संगीत, चित्रकला , तैरना आदि है। इस अधार पर यह कहा जा सकता है कि हमारे यहाँ कला कौशल में क्रिया शब्द की भावना अधिक है। उपन्यास मृगनयनी में भी वर्मा जी ने भारतीय संस्कृति के अंतर्गत विभिन्न कलाओं का वर्णन करने का प्रयास किया है। जिसमें नायिका मृगनयनी का भूमिका बड़ा महत्वपूर्ण है। उपन्यास का शुरूवात गावँ से होता है और गावँ में शास्त्रीय लोकगीतों का बड़ा महत्व है। उपन्यास में तोकगीतों का वर्णन मुख्य रूप से स्त्रियों के द्वारा वर्णन मिलता है। होली के अवसर पर गावँ की स्त्रियाँ विभिन्न गीत गाती है और साथ में नाचती भी है। पाठ में कई मौड़े स्वरों में निन्नी का मधुर कंठ कुछ अलग सुनाई दे रहा था। गीत तीन कड़ी का ही था। स्त्रियाँ एक कड़ी को गाकर चुप हो जाती थी। इसमें निन्नी (मृगनयनी) की भूमिका विशेष महत्वपूर्ण है। हम लोक गीत का एक उदाहरण देखते हैं

" जाग परी मैं पिया के जगाने
भाग जागे पिया मोर घर आये
उन नैनन में नींद कहाँ जिन नैनन में आप समाये।"8

धर्म : मनुष्यजाति के लिए धर्म वह रीति-रिवाज है, जिससे अछुता कोई नहीं है। धर्म एक संस्कृत का शब्द है। जिसका अर्थ बहुत व्यापक होता है। ध देवनागरी वर्णमाला 19 वां अक्षर और त वर्ग का चोथा व्यंजन है। भाषा विज्ञान की दृष्टि से यह दंत्य, स्पर्श, घोष तथा महाप्राण ध्वनि है। मूल रूप से जो धारण किए पुए है उसे धर्म कहा जाता है। जैसे इल पृथ्वी ने इस सम्पूर्ण संसार को धारण किए हुआ है। मनुष्य जाति भी रोजमर्रा जिंदगी में विभिन्न रीति – रिवाज नियमों को धारण करते हुए चलतें है। मृगनयनी उपन्यास में धार्मिक रीति – रिवाज, पुजा-पाठ, ईशवर वंदना का वर्णन भी प्रस्तुत उपन्यास में मिलता है। उपन्यास में स्नातन धर्म का वर्णन मिलता है। जिसमें भगवान कृष्ण का वर्णन मिलता है। भगवान के लिए कोई जाति, कोई सम्प्रदाय अलग नहीं होतें उनके लिए सब समान होते हैं। वर्ण को देखकर धर्म का पता लगाना हमेशा मुशकिल होता है। उपन्यास में इसका एक वर्णन देख सकत है " डरते डरते पुछा बाबाजी, महाराज का कौन सा धर्म है, अरे धर्म जिसको अपने बड़े लोगों ले बतलाया है, राधाकृष्ण की, सीताराम की भक्ति, साधारण लोगों के लिए तो इतना ही तो बहुत है।"9 इसके उपरांत स्नातन धर्म में भगवान शिव का भी वर्ण मिलता है।स्नातनी धर्म के लोग विभिन्न अवसर पर भगवान शिव की पुजा भी करते हैं " शैव ने, वैष्णव से कहा, गंगाजल की चार बुंदों से क्या होगा, मैं कहता हुँ, किसी फुल का, फुल न मिले तो मिट्टी का शिवलिंग बनाकर ऊँ नम शिवाय से अभिमंत्रित करके कुए में डाल दो, कुआ शुद्ध दो जायेगा, क्यों जंजाल बड़ा रहे हो।"10

विवाह संस्कार : भारतीय समाज में अति प्राचीन काल से विवाह एक अत्यन्त पवित्र सामाजिक बंधन माना जाता है। हिंदु धर्म के अनुसार उसे सोलह संस्कारों में से एक महत्वपूर्ण संस्कार माना गया है। भारतीय संस्कृति स्त्री पुरूष के लिए विवाह सम्बंध को चिरकालिक तथा अनेक जन्मों का सम्बंध मानती है। उसे नसीब के साथ भी जोड़ा गया है। विवाह की सांस्कृतिक मान्यता एंव गरिमापूर्ण मर्यादा को बीसवीं शताब्दी की अतिबौद्धिक, वैज्ञानिक, यांत्रिक समाज में उत्पन्न व्यक्तिवाद दर्शन ने भयानक आघात पहुचायाँ है। पाश्चात्य खुली विचारधारा ने दुष्परिणाम स्वरूप भारतीय समाज में भी अनेक कारणों से विवाह सम्बंध पर प्रश्न चिन्ह लग रहा है। आज स्त्री को विवाह सम्बंध चिरकालिक एंव विवाद से परे नहीं रहे। विवाह सम्बंध को आज नित नई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। विवाह सम्बधों के प्रति आज के बुद्धिवादी स्त्री – पुरूष बहुत ही मुक्त भाव एंव विचार रखते है। बौद्धिकता की आड़ में पुरूष और स्त्री दोनों विवाह के सम्बंधों को स्वीकार कर विवाह की सीमाओं के बाहर सहज रूप से स्वीकर करते हुए दिखाई देते हैं। जो की हमारी भारतीय संस्कृति का एक अभिन्न अंग है। विवाह संस्कार का वर्णन भी उपन्यास मृगनयनी में बड़े सुन्दर ढंग से मिलता है। एक उदाहरण प्रस्तुत उपन्यास में निन्नी और राजा मानसिंह में विवाह होता है। राजा मानसिंह तोमर, गुजर की कन्या से प्रेम कर बैठते हैं और फलस्वरूप उन्हें विवाह करना पड़ता है। विवाह का एक दृश्य कुछ इस प्रकार है " राजा ने अपना हाथ बढ़ाया कहा इस भाषा को संसार भर समझता है। अपने हाथ मेरे हाथ में दो। गर्दन मोड़े हुए, कनखियों देखते हुए, धड़कते कलेजे और अर्द्धस्मित के साथ निन्नी ने अपना कापँता हुआ धुल भरा हाथ, उसके हाथ में दे दिया। "11 दोनों अलग-अलग जात के होते हैं। राजा निन्नी के व्यक्तित्व से प्रसन्न होकर कोई जात – पात नहीं देखते और गुजर वंश के होने बाबजुद भी शादी कर लेते हैं। इस तरह हमें प्रस्तुत उदाहरण के माध्यम से सुन्दर विवाह का वर्णन मिलता है। इसी तरह विवाह हमारे भारतीय संस्कृति का सबसे पवित्र बंधन है। जिसमें किसी नारी को विभिन्न रस्मों के माध्यम से किसी पुरूष के हाथ में उसका हाथ सौप देता है और दोनों जीवन भर एक दूसरे का साथ रहकर जीवन व्यतीत करते हैं।

निष्कर्ष

उपरोक्त विवेवच के आधार पर हम निष्कर्ष में यह कह सकते हैं कि वृंदावन लाल वर्मा हिंदी साहित्य के ऐतिहासिक उपन्यास सम्राट है। आपने मृगनयनी नामक उपन्यास में मात्र ऐतिहासिकता रक्षा नहीं की है बल्कि भारतीय संस्कृति के विभिन्न पहलुओं का वर्णन भी बड़े सुंदर ढंग से किया है। मृगनयनी एक भारतीय नारी है, जिसके प्रत्येक कार्य में हमें भारतीय संस्कृति अनेक रूपों का वर्णन मिलता है। भारतीय संस्कृति का असली रूप ग्राम में बसा हुआ है। खेत-खलिहान, पुजाँ- पर्व, गीत-संगीत आदि सभी रूपों का वर्णन हमें मृगनयनी उपन्यास में मिलता है। उपन्यास का आरम्भ ग्रमीण वातावरण से होता है। जहाँ गावँ के लोग खेतों में कार्य करते हुए दिखाई पड़ते हैं। लोग दिन में खेत में काम करते और रात्रि के समय खेत की रखवाली भी करते हैं। एक उदाहरण " पवन के झोकों के कारण कभी मेढ़ के छोटे-छोटे झाड़-झकोरे हिल जाते थे तो उसको किसी वन्य पशु के आ जाने की शंका हो जाती थी तुरंत कमान पर तीर चढ़ा लेती थी।"12 इसी तरह वर्मा जी ऐतिहासिक कथा-प्रसंग को उपन्यास का मुल विषय बनाया है और बड़े सुंदर ढंग से भारतीय संस्कृति का चित्रण किया है।

संदर्भ सूची

1. रेखा, साहित्यिक निबंध, रेखा प्रकाशन, दिल्ली110006, 1999, पृ.सं. 482
2. तिवारी रीमा, हमारे पर्व त्यौहार, रीमा तिवारी प्रकाशन,दिल्ली110092, पृ.सं.3

3. वर्मा वृंदावन लाल, मृगनयनी, डायमंड पाकेट बुक्स (प्र.)लि. दिल्ली110032, पृ.सं. 12
4. वही, पृ.सं. 10
5. वही, पृ.सं. 219
6. तिवारी रीमा, हमारे पर्व त्यौहार, रीमा तिवारी प्रकाशन,दिल्ली110092, पृ.सं.21
7. वर्मा वृंदावन लाल, मृगनयनी, डायमंड पाकेट बुक्स (प्र.)लि. दिल्ली110032, पृ.सं. 24
8. वही, पृ.सं. 15
9. वही, पृ.सं. 28
10. वही, पृ.सं. 30
11. वही, पृ.सं. 131
12. वही, पृ.सं. 17